

जागृति संदेश

Revival Ministries Australia की ओर से

P.O. Box 2718 BC TOOWOOMBA Q4350 Australia

Phone: 61-7-46130633; e-mail: rma@revivalministries.org.au

Website: www.revivalministries.org.au

***** सितम्बर 2007 **** सितम्बर 2007 **** सितम्बर 2007 *****

प्रेरितिय झुण्ड

पहली प्रेरितिय दल

जैसे हम प्रेरितों के काम पहला अध्याय में पढ़ते हैं, तो पहली प्रेरितिय दल की गठन को हम पाते हैं। इस दल में प्रेरित लोग सामिल हैं जो यीशु के संग थे, **ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों (प्रेरित 1:14)** साथ ही साथ और विश्वासी भी, **एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग (प्रेरित 15 ख)**। वे स्त्री और पुरुष थे जो एक चित्त होकर एक जगह इकट्ठे थे **(प्रेरित 1:14 और 2 :1)**; वे **एक चित्त और एक मन के थे (प्रेरित 4:32)**। यह प्रेरितिय झुण्ड प्रार्थना में लिन थे। यही प्रार्थना के कारण ही पवित्र आत्मा ने पतरस मत्तियाह को बारवाह प्रेरित के रूप में नियुक्त करने में अगुवाई की। प्रेरितिय झुण्ड का पहला उदाहरण था, शिष्यों के एक चुने हुए वर्ग एक मन होकर प्रार्थना और बिन्ती में लगे रहना; इसी झुण्ड के लिए परमेश्वर ने अपनी आत्मा भेजी, पिन्तेकुस्त का पर्व पुरा करते हुए और प्रेरितिय सेवाकाई को खोला यीशु मसीह की कलीसिया को बढ़ाने के लिए।

पतरस ग्यारह की ओर से खड़ा होकर एक सामर्थशाली संदेश दे सका बताते हुए कि यीशु की मसीह हैं, लोगों को आवगत कराते हुए **मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे (प्रेरित 2:38)**। यह प्रेरितिय झुण्ड 3000 नई बदले हुए लोगों को स्वीकार करने के लिए तैयार थी **और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटि तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहें (प्रेरित 2:42)**।

प्रेरित लोग जिन्हें यीशु ने तैयार की थी, पुत्रत्व की आत्मा पाने के लिए हर तरह तैयार थी और इस रीति से सेवाकाई की, कि वे यीशु के स्तर के थे। प्रेरित 2 का अनुभव प्रेरितिय झुण्ड के लिए पहली मंजिल में 3000 नई आत्माओं का परिवर्तन के अनुभव से बिल्कुल अलग था जिन्होंने बपतिस्मा ली और पवित्र आत्मा का दान पाया। 120 लोगों के अनुभव वे अन्य जाति के अनुभव से जिन्होंने कुरनेलियुस के घर में आत्मा से भर गए थे **(प्रेरित 10)** वा **प्रेरितों के काम** पुस्तक के अन्य सभी पवित्र आत्मा से भर जाने के घटनाओं से बिल्कुल अलग था।

पिन्तेकुस्त की जागृति बारहवा शताब्दी के शुरू में आरम्भ हुई और पवित्र आत्मा की भरपूरी पुनःस्थापित से फिर लगातार बनी हुई है। यह पुत्रत्व की आत्मा की भरपूरी की पुनःस्थापना नहीं थी। पुत्रत्व की आत्मा उन दिनों शुरू हुई थी !

यह समय परिपक्वता की है न कि पिन्तेकुस्त की। अंत में, पिन्तेकुस्त आधरों में से एक है परन्तु पुत्रत्व एक माध्यम है जिससे परिपक्व कलीसिया लक्ष्य तक पहुँचती है, जो मसीह की महीमा है जो **पृथ्वी में संतो में प्रगट किया गया है**।

प्रेरितिय पुरुष होने के लिए बुलाया गया

- यीशु के पिछे चलने के लिए बुलाए गए,
- सब कुछ भूलाकर पहले परमेश्वर का राज्य खोजने के लिए,
- खुद को त्याग कर क्रुस ले कर उस के खातिर दुःखो को गले लगाने के लिए,
- जहाँ कही मसीह भेजे वहाँ जाने के लिए और सेवाकाई करने के लिए

इस बुलाहट का आज्ञा पालन करने के लिए अपनी सारी जीवन को अनुकूल बनाना और जीवन के सारे लक्ष्यों को और व्यवहारीक कार्यों को परमेश्वर की बुलाहट अनुसार बनाना ।

परमेश्वर का बुलाहट केवल एक अच्छा मसीह बनना ही काफी नहीं है, परिवारिक जीवन में सफल होना नहीं है, व्यापारों में सफलता प्राप्त करना नहीं है, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आशा रखें । परमेश्वर का बुलाहट है परमेश्वर की योजना को पूरा करना : **हम उसके इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं** । परमेश्वर की योजना ज्ञान का रहस्य के अनुसार हम पर प्रगट किया गया **इफिसियों 3:1-11** के अनुसार ।

परमेश्वर प्रेरितिय झुण्डों को खडा कर रहा है

हम प्रेरितिय झुण्ड का हिस्सा होकर एक होने के लिए बुलाए गए हैं, **एक ही मन और एक ही आत्मा** होने के लिए विश्वासियों की एक ही देह जैसे (**प्रेरित 1-4**)।

इन दिनों में प्रभु प्रेरितिय झुण्डों को बढ़ा रहा है, प्रेरितों द्वारा संचालित, जहाँ पाँचों सेवाकाईयाँ मौजूद हो, देह के समान पूरी तौर से काम करने के लिए । देह के हर एक अंग है **जिस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर भाग के परिमाण से उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है, कि वह प्रेम में उन्नति करती जाएं** (**इफिसियों 4:16**) ।

परमेश्वर प्रेरितिय झुण्डों को देख रहा है जिस में वह एक दिन में 3000 आत्माएं को जोड़ सकता है ! दूसरे शब्दों में , वह ऐसी झुण्डों को तैयार कर रहा है जो पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से प्राप्त करके सम्पूर्ण तौर से पृथ्वी में मसीह की देह की कार्य सम्भाल सकें ।

प्रेरितिय झुण्ड सब से आगे चलनेवाला है जिसे परमेश्वर इन दिनों खड़ा कर रहा है उसके लोगों को विजय प्रदर्शन करने के लिए , जिसे उसने हमें शैतान के ऊपर दिया है । प्रेरितिय झुण्ड जैसे मसीह की अधिकार में पृथ्वी पर कार्य करने लगती है, तब एक विश्वासियों की भीड़ प्रेरितिय शिक्षा को गले लगाता है और कलीसिया अंत में उसकी लक्ष्य तक पहुँचती है , राज्य और शासन करने के लिए सिव्योन में यीशु मसायाह के साथ ।

पुनःगठन के समयों में जिसमें हमें जिने का सौभाग्य मिला है , परमेश्वर ने प्रेरितिय झुण्डों की गठन होने के लिए संसार में नियुक्त किया है।

एक प्रेरितिय दल है :

- संतों की एक देह जिसे समर्पण में एक साथ बुलाया गया है ।

- पृथ्वी की सारें राष्ट्रों में परमेश्वर की राज्य स्थापित होते हुए देखने के लिए ।
- ये संतगण को संस्थाओं और संगठनों से बुलाया गया पूर्ण आज्ञाकारिता में और परमेश्वर का वचन में चलने के लिए ।
- इन झुण्डों में सभी सेवाकाईयाँ और वरदान जिसे परमेश्वर ने दिया है , नयाँ नियम में अपनी-अपनी स्थान ले लेती है पूरी तौर से कार्यशील होती है ।
- ये झुण्ड राष्ट्रों में फैलते जाएंगे जिन्हें प्रेरित लोग अगुवाई करेंगे ।
- झुण्डों के सभी सदस्य की भूमिका होगी परमेश्वर की स्पष्ट बुलाहट और एक पुत्रत्व की सामर्थमय प्रगटीकरण रखते हुए ।

प्रेरितीय झुण्ड कलीसिया के लिए एक नमूना है

2001 के मध्य में प्रभु ने एक प्रेरितीय झुण्ड गठन करने के लिए हमें निर्देश दी और सालों से प्रेरितीय झुण्ड को समझने और अभ्यास करने के लिए उसने हमें प्रकाश दी। और प्रेरितीय झुण्ड को एक **नमूना** बनने के लिए प्रभु ने बढ़ाया । पौलुस यह सम्बोधन **फिलिप्पियों 3:15-17** में जहाँ वह उनके विषय में कहता है **एक ही मन** के होकर और **एक ही रीति** में चलते हुए **सिद्ध हों** । **1 कुरिन्थियों 2:6-16** के आरम्भ में, पौलुस **परमेश्वर का ज्ञान भेद के रीति** के विषय पर सम्बोधन करता है कि यह ज्ञान परिपक्व लोगों को मिलती है जिसे **परमेश्वर ने हमारे सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया** ।

परमेश्वर हरदम कलीसिया के लिए सिद्धता में आने के लिए अभिप्राय रखता है और यह आवश्यक है कि कलीसिया सिद्धता में आए , भेदों का प्रकाश प्राप्त कर सके और प्रभु की महिमा में चलने और अनुभव में शुरूआत कर सकें ।

इन अन्तिम दिनों में **कलीसिया** की धारणा बहुत ही गड़बड़मय है अनेक सम्बोधन के कारण - भवन अथवा संगठन अथवा संस्था । इसलिए परमेश्वर विशेष रीति से नई प्रेरितीय झुण्डों को नयाँ नियम की कलीसिया के लिए नमूना बनने के लिए बढ़ा रहा है ।

पौलुस के बातों को गौर कीजिए , **हम में मसीह का मन है** (**1 कुरिन्थियों 2: 16**) ! इस में अनेक सच्चाईयाँ हैं! देह की कोई भी सदस्य में अपने आप **मसीह का मन** नहीं आ सकता परन्तु यह संयुक्त सच्चाई हैं । यह एक झुण्ड (संयुक्त देह) है जहाँ कलीसिया शैतान के ऊपर जय पाती है और मसीह की जय लोगों के बीच में प्रदर्शन करती हैं ।

प्रेरितीय कलीसिया होने के लिए बुलाया गया

नई नियम की कलीसिया न तो जातिय, न तो संस्थाबद्ध और न ही अन्तिम समय की प्रेरितीय कलीसिया है । हर जगह, हमारे चारों तरफ विश्वासीलोग और मसीही लोग समझौता करने की ताक में रहते हैं, प्रत्यक्ष है कि यीशु और प्रेरितों द्वारा निर्धारित परमेश्वर की बुलाहट को ग्रहण नहीं करते वा बाईबल जो कहती है उन्हें इन्कार करती हैं ।

ऐसे मसीही लोग परमेश्वर का वचन के आज्ञा पालन बढ़कर मनुष्य की मार्गों और रीतियों को पसन्द करते हैं, एक जाती प्रति और रिवाजों प्रति वफादार बनकर गलती कर बैठते हैं । प्रथम प्रेरित लोग धार्मिक अगुवों द्वारा चुनौती

पाकर उनके दिनों में कहा “**इस नाम से उपदेश न करना । परन्तु पतरस ने कहा - मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा पालन करना ही कर्तव्य कर्म है**” प्रेरित 5:28-19 । इसी तरह यीशु भी उसकी कलीसिया से यही उम्मीद रखता है कि मनुष्यों से बढ़कर परमेश्वर की माने ।

यीशु को सम्पूर्ण गौरव मिलनी चाहिए

कई बार मनुष्य उनकी विश्वास की गवाही यीशु मे देते है, तुरन्त प्रश्न उठता है, आप कौन सी कलीसिया जाते हो? मनुष्य की सोच और कलीसिया की अभ्यास इतिहासी दृष्टिकोण से कलीसिया को यीशु से उँचा उठाया है जबकि यीशु सब बातों में वही प्रधान ठहराना चाहिए (**कुलुस्सियों 1:18**) । मसीही लोग साधारणतः उनके कलीसिया के विषय में और उनकी कलीसिया में क्या-क्या हो रहा है ज्यादा चर्चा करते हैं । यह इसलिए हुआ क्योंकि कलीसिया को हमने नयाँ नियम अनुसार यीशु मसीह की कलीसिया को हमने ‘**हमारी**’ बनाई है ।

अनुग्रह और प्रेरिताई द्वारा जातियों में पहुँचना

रोमियों 1:5 में पौलुस कहता है कि वह और उसका समय की कलीसिया जो मसीह की देह है, “**जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी माने** । बाईबल कहती है कि यह पिता की ओर मसीह द्वारा अनुग्रह और प्रेरिताई द्वारा मिली जो सारे जातियों में आज्ञा पालन में अगुवाई करती है ।

यीशु ने बारह प्रेरितों को प्रशिक्षण दी और नियुक्त की : उसने उन्हें कलीसिया को जन्म देने और गठन करने को अधिकार बख्सा, उसने उन्हें स्वर्ग राज्य की कुंजीया दी। समय के अंत में यीशु फिर प्रेरितों को उसकी कलीसिया में सही नींव डालने और सब सेवाकार्यों और दी गई वरदानों को खड़ा कर के आगे बुलाता है जो कलीसिया को स्थापित करते समय जरूरत पड़ती है । मसीह जो आज कलीसिया को खड़ा कर रहा है, अधोलोक के फाटक को रोके रहेगा ।

पिन्तेकुस्त से बेदी तक

यह पहली प्रेरितीय झुण्ड द्वारा परमेश्वर ने पिन्तेकुस्त का पर्व को पूरा किया और यह प्रेरितीय झुण्ड द्वारा ही परमेश्वर अंत के समय में खड़ा करके वह बेदी का पर्व को पूरा करेगा । यही कलीसिया है जो परिपूर्णता में प्रवेश करेगी जैसे परमेश्वर ने मसीह में पूरी की **उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदैव वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)** । यह परमेश्वर की इच्छा है कि मसीह की देह में परमेश्वर की परिपूर्णता सदैव वास करे । यह बेदी-पर्व की परिपूर्णता है; परमेश्वर उसके लोगों में सदैव वास करते हुए , मसीह की सम्पूर्णता कलीसिया में प्रगट है ।

प्रेरितीय झुण्ड की देखरेख और आश्रय

प्रेरितीय झुण्ड का स्वभाव निम्न है : प्रभु ने प्रेरितीय झुण्ड को खड़ा किया, प्रेरितीय सेवाकाई को पुनःस्थापित करते हुए और प्रेरितीय अगुवापन के सेवकों और संतों को इकट्ठा करते हुए जो इन दिनों एक मन और एक आत्मा होकर परमेश्वर की सेवाकाई साथ मिलकर करने की योजना रखते हैं ।

प्रभु संख्या में बढ़ते हुए प्रेरितों को , भविष्यद्वक्ताओं को, सुसमाचारकों को, चरवाहों को और शिक्षकों को, सहायकों को, प्रशासकों को, वरदान से भरे संतों को, शिष्यों को और नई विश्वासियों को इस झुण्ड में सामेल कर रहा है।

हरेक अगुवाई के सेवा में प्रेरितगण लगायत एक दुसरे के लिए अगुवापन में जिम्मादार हैं जो परमेश्वर का वचन के प्रति समर्पित है, उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म के शिक्षा के लिए लाभदायक हैं (2 तोमोथी 3:16) ।

अगुवापन के सेवाकाईयाँ जो प्रभु ने दी है, विशेष तौर से प्रेरित लोग, भविष्यद्वक्ताएँ और शिक्षकें (1 कुरिन्थियों 12:28) लेकिन कभी-कभी चरवाहें और सुसमाचारकें जो अगुवों के काम करते हैं, पवित्र आत्मा की नियुक्ति के अनुसार देखरेख के कार्य को सम्भालते हैं ।

प्रभु यीशु मसीह ही केवल कलीसिया की सिर है और वही उसका अभिषेक में आत्मा और उसके वचन के अधिकार द्वारा पूरा आश्रय पहुँचाता है । किसी भी मनुष्य ने वचन में कलीसिया की मुख्यता नहीं दी है । इसलिए आश्रयपन मनुष्य द्वारा नहीं आता परन्तु प्रभु की ओर से सीधा आता है जब कलीसिया को प्रेरितिय क्रम में रखा गया होता है ।

पावल गैलिंगन